Volume 2; Issue 1
January to March 2025

E-ISSN: 3048-6742

Sanskriti-Samvahika

संस्कृति-संवाहिका

Peer Review Indexed Refereed Journal

Quarterly Journal

Editor-in-Chief

Dr. Ashwini Devi

Sanskriti-Samvahika संस्कृति-संवाहिका
E-ISSN: 3048-6742
https://sanskritisamvahika.in
Volume 2; Issue 1; Jan. to March, 2025; Page No. 26-32
Peer Review, Indexed and Refereed Journal

भास के नाटकों में सात्त्विक अभिनय

डा. किरन वर्मा
सहायक प्रोफेसर
सी एम पी महाविद्यालय
प्रयागराज

सारांश

नाट्यशास्त्र में वर्णित चार अभिनयों में से सात्त्विक अभिनय को अत्यन्त महत्वपूर्ण बताया गया है। सात्त्विक अभिनय सत्त्व से सम्बन्धित होने के कारण महत्त्वपूर्ण माना गया है। नाट्यशास्त्र में नायक-नायिका के सात्त्विक भावों का उल्लेख किया गया है महाकवि भास ने अपने नाट्य-कृतियों में इस भाव का प्रयोग बड़ी कुशलता से किया है प्रस्तुत शोध पत्र में हम नायक-नायिका के सात्त्विक भावों का अलग-अलग वर्णन करते हुए भास के नाटकों में उसके प्रयोग पर विस्तृत प्रकाश डालने का प्रयास करेंगे।

मुख्य शब्द: *भास, नाटक, सात्त्विक अभिनय*

नाट्यशास्त्र में वर्णित चार अभिनयों में से सात्त्विक अभिनय को अत्यन्त महत्वपूर्ण बताया गया है। सात्त्विक अभिनय सत्त्व से सम्बन्धित होने के कारण महत्त्वपूर्ण माना गया है।

नायक - नायिका के हृदय में स्थित दुःख एवं सुख की भावना में उसी तरह अन्तःकरण वाला हो जाना ही सत्त्व कहलाता है सत्त्व से उत्पन्न होने के कारण वे भाव सात्त्विक कहलाते और इसी से सम्बन्धित अभिनय सात्त्विक अभिनय कहलाता है। आन्तरिक मनोभावों के प्रदर्शन में अभिनेता को अधिक श्रम की आवश्यकता

पड़ती है। इसी कारण इस अभिनय को उत्तम कोटि का कहा गया है यदि अभिनय के द्वारा सात्त्विक भाव का प्रकाशन न हो तो अभिनय का उद्देश्य अवरुद्ध हो जायेगा। अत: सत्त्व का अधिकाधिक प्रयोग ही सर्वश्रेष्ठ अभिनय माना जाता है।

नाट्यशास्त्र में नायक-नायिका के सात्त्विक भावों का उल्लेख किया गया है महाकवि भास ने अपने नाट्य-कृतियों में इस भाव का प्रयोग बड़ी कुशलता से किया है प्रस्तुत शोध पत्र में हम नायक-नायिका के सात्त्विक भावों का अलग-अलग वर्णन करते हुए भास के नाटकों में उसके प्रयोग पर विस्तृत प्रकाश डालने का प्रयास करेंगे। नाट्यशास्त्र में नायक के आठ सात्त्विक भाव बतायें गये हैं-

"शोभा विलासो माधुर्य स्थैर्य गाम्भीर्यमेव च।

ललितौदार्यतेजांसि सत्वभेदास्त पौरुषाः ।।" 1

शोभा -नाट्य शास्त्र के अनुसार - दक्षता, शौर्य, उत्साह, उच्च कार्यों में स्पर्धा तथा नीच कार्यों के प्रति घृणा का भाव रखना शोभा कहलाता है। कर्णभारम् के नायक कर्ण के कार्यों का वर्णन इस सन्दर्भ में किया जा सकता है एक तरफ युद्ध में जाने के लिए उनके मन में उत्साह है-

"मा तावन्मम शरमार्गलक्ष्यभूताः

संप्राप्ताः क्षितिपतयः सजीवशेषाः ।

कर्तव्यं रणशिरसि प्रिय कुरुणां

द्रष्टव्यो यदि स भवेद्धनंजयो मे ।।" २

आज तक ऐसा पहले कभी नहीं हुआ कि कोई भी राजा मेरे बाणों के रास्ते में आकर जीवित चला गया हो। आज इस युद्ध में मैं कौरवों की अभिलाषा पूर्ण कर दूं यदि अर्जुन को देख जाऊँ तो कर्ण का कुन्ती के सम्मुख की गई प्रतिज्ञा और कवच कुण्डल देने के बाद भी रणभूमि में युद्ध करने के लिए चले जाना कर्ण के शौर्य की पराकाष्ठा है। कर्णभारम् के प्रथम अङ्क के 24वें श्लोक में कर्ण बिना कवच कुण्डल के भी अर्जुन से युद्ध करने के लिए लालायित हैं-

① नाट्यशास्त्र 24/31

② कर्णभारम् 1/5

"शङ्खध्वनि : प्रलयसागर-घोषतुल्यः

कृष्णस्य वा न तु भवेत् स तु फाल्गुनस्य ।

नूनं युधिष्ठिर पराजय - कोपितात्मा

पार्थः करिष्यति यथाबलमद्य युद्धम् ।।" ३

अर्थात् यह प्रलयकालीन समुद्र की तरह गम्भीर ध्वनि वाला या तो कृष्ण का शङ्ख है या अर्जुन का। युधिष्ठिर के पराजय से क्रुद्ध होकर अर्जुन आज मुझसे अवश्य युद्ध करेगा।

विलास - भरतमुनि के अनुसार वीरता प्रदर्शक वृषभ के समान चाल रहना , स्थिर दृष्टि तथा मन्द मुस्कान के साथ की जाने वाली बातचीत का होना विलास गुण कहलाता है। बालचरितम् नामक नाटक में दामोदर को विलास गुण से युक्त दिखाया गया है।

माधुर्य - नाट्यशास्त्रकार के अनुसार दीर्घकालीन अभ्यास के कारण इन्द्रियों का किसी भाव या विकार के अतिशय रहने पर भी आन्दोलित न होना और अपनी स्थिर प्रवृत्ति में रहना माधुर्य है। स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में नायक उदयन के हृदय में अपनी पत्नी वासवदत्ता के लिए प्रेमभाव है लेकिन पद्मावती के समक्ष वह अपने इस भाव को छुपाता है। और अपने आँसू का कारण काशपुष्प के कणों को बताता है।

③ कर्णभारम् 1/24

"शरच्छशाङ्गगौरेण वातविद्धेन भामिनी ।

काशपुष्पलवेनेदं साश्रुपातं मुखं मम ।।" 4

स्थैर्य - धर्म अर्थ काम में किसी शुभ या अशुभ परिणाम के उत्पन्न होने पर अपने कार्य से विचलित न होना 'स्थैर्य' कहलाता है। प्रतिमानाटकम् के प्रथम अङ्क में जब राम का राज्याभिषेक होते-होते रुक जाता है और इसकी सूचना कञ्चुकी राम को देते हैं कि कैकेयी के कारण आपका राज्याभिषेक रुक गया राम यह सुनकर तनिक भी विचलित नहीं होते हैं और कञ्चुकी से कहते हैं-

रामः – आर्य! भवान् खल्वस्मत्पक्षपातादेव नार्थमवेक्षते।

कुतः,

"शुल्के विपाणितं राज्यं पुत्रार्थे यदि याच्यते ।

तस्य लोभोऽत्र नास्माकं भ्रातृराज्यापहारिणाम् ।।" 5

कञ्चुकीय: - अथ।

रामः - अतः परं न मातु: परिवादं श्रोतुमिच्छामि।

④स्वप्नवासवदत्तम् अङ्क 4/7

⑤प्रतिमानाटकम्अङ्क1/15

यहाँ राम का स्थैर्य गुण प्रकट होता है। प्रथम अङ्क में ही राम लक्ष्मण को समझाते हुए अपने स्थैर्य का परिचय देते हैं-

रामः - सुमित्रामात: ! अस्मद्राज्यभ्रंशो भवत उद्योगं जनयति। आ: अपण्डितः खलु भवान्।

" भरतो वा भवेद् राजा वयं वा ननु तत् समम्।

यदि तेऽस्ति धनुःश्लाघा स राजा परिपाल्यताम्।।"6

गाम्भीर्य- नाट्यशास्त्र के अनुसार क्रोध, हर्ष तथा भय की दशा में सुख दुःखादि भावों का चेहरे पर न दिखायी पड़ना गाम्भीर्य गुण कहलाता है। प्रतिमानटकम् के प्रथम अङ्क में जब कञ्चुकी राम से महाराज दशरथ की रक्षा करने के लिए कहता है तब राम कहते हैं कि यह दुःख कहाँ से फट पड़ा है तब कञ्चुकी कहता है कि आत्मीय जन से जिसमें वह दुःख का निमित्त कैकेयी को बताता है तो राम कहते हैं-

राम: - किमम्बाया: ? तेन हि उदर्केण गुणेनात्र भवितष्यम्।

राम: - श्रूयताम्,

" यस्याः शक्रसमो भर्ता मया पुत्रवती च या।

फले कस्मिन् स्पृहा तस्या येनाकार्येकरिष्यति।।"7

यहाँ राम की गम्भीरता प्रकट होती है।

⑥ प्रतिमानाटकम्अङ्क1/20

⑦ प्रतिमोनाटकम अङ्कः 1/13

ललित - नाट्यशास्त्र के अनुसार, जिसमें वाणी और श्रृंगारिक चेष्टाएं बिना प्रयास के ही सुकुमार रहती है उस गुण को ललित कहा गया है। जैसे अविमारकम् नामक नाटक में नलिनिका और धात्री के साथ अविमारक के मधुर वार्तालाप को दिखाया गया है अविमारक धात्री से कहता है कि देवि! आप एक बार यह तो बता दे कि राजकुल का नियम क्या है? तो धात्री अविमारक के कान में कुछ कहती है तो उसके उत्तर में अविमारक कहता है -

"श्रुत्वा तु राजो गृह संविधान

प्रविष्टमात्मानमवैति बुद्धिः ।

न पौरषं वै परदूषणीयं

न चेद् विसंवादमुपैति दैवम् ।।"8

औदार्य - सभी के साथ प्रिय संभाषण तथा उदार आचरण के द्वारा समभाव रखना औदार्य है। चारुदत्तम् नामक नाटक का नायक चारुदत्त औदार्य नामक गुण से युक्त है वह दान को उत्तम् वस्तु समझता है उसकी सम्पत्ति दान देने में ही विनष्ट हुई है-

"क्षीणा ममार्थाः प्रणयिक्रियासु

विमानितं नैव परं स्मरामि ।

एतत्तु ते प्रत्ययदत्तमूल्यं

सत्त्वं सखे! न क्षयमभ्युपैति ।।"9

(8) अविमारकम् अड़्क 2/8

(9) चारुदत्तम् अड़्क 1/4

अर्थात् मेरी सम्पत्ति प्रेमी जनों के दानादि कार्यों में समाप्त हुई है। परन्तु याचकों को निराश कर मैं अपने को अपमानित करने की बात नहीं सोचता हूँ। मित्र दानादि में व्यय किया गया धन श्रेयस्कर होता है। यही मेरा सत्त्व क्षीण नहीं होता है।

तेज - नाट्यशास्त्र के अनुसार किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा किये गये आक्षेप तथा अपमान को प्राण जाने पर भी बर्दाश्त न करना तेज कहलाता है। प्रतिमानाटकम् में लक्ष्मण को तेज गुण से युक्त दिखाया गया है। कैकेयी द्वारा राम को वनवास भेजने पर राम का तिरस्कार उनको बर्दाश्त नहीं होता और वे धनुष उठा लेते हैं-

"यदि न सहसे राज्ञो मोहं धनुः स्पृश मा दया

स्वजननिभृतः सर्वोऽप्येवं मृदुः परिभूयते ।

अथ न रुचितं मुञ्चत्वं मामहं कृतनिश्चयो

युवतिरहितं लोकं कर्तुं यतश्छलिता वयम् ।।" 10

स्त्रियों के सात्त्विक भाव - सात्त्विक भावों को आङ्गिक विकारों के द्वारा व्यक्त किया जाता है। नाट्यशास्त्रकार ने स्त्रियों में तीन प्रकार के आङ्गिक विकार माने हैं- अङ्गज, स्वाभाविक तथा अयत्नज ।

अङ्गज नामक सात्त्विक भाव हाव भाव, तथा हेला के भेद से तीन प्रकार के होते हैं-

भाव की वह अवस्था जो चित्तवृत्तियों से उद्भूत होकर नेत्र, भ्रू ग्रीवा आदि आङ्गिक चेष्टाओं के द्वारा श्रृंगार रस की अनुभूति कराती है हाव कहलाती है।

⑩ प्रतिमानाटकम् अङ्क 1/18

वाणी, अङ्ग, मुखराग तथा सत्त्व के अभिनय द्वारा मन के सूक्ष्म भावों का जिसमें भाव न हो वह भाव है।

जो हाव श्रृंगार रस के आश्रित होकर ललित शारीरिक चेष्टाओं का अभिव्यंजक हो उसे हेला कहते हैं।

स्त्रियों के स्वभावज अलङ्कार - अविमारकम_नामक नाटक में 'विलास', विभ्रम, तथा किलकिञ्चित नामक स्वभावज अलङ्कारों का प्रयोग किया गया है। नायक को देख करके नायिका के शरीर में विभिन्न प्रकार के विकार उत्पन्न होते हैं-

कुरङ्गी - हा हीनं चारित्रम् । भीतास्मि ।

अविमारक: -

"न त्वं प्रिये! मम नवासि मनोभियोगात्

किं कम्पसे पवन वेगहता लतेव ।

भद्रे! भयं त्यज कुरुष्व मयि प्रसादं

किं वा प्रलप्य बहुधा शरणागतोऽस्मि ॥" 11

पुनः अविमारक अपनी प्रियतमा को देखकर कहता है -

"नेत्रे बाष्पपरिप्लुते करघृतौ व्यावल्गमानौ स्तनौ

श्रोणी चाधिक भारिका न विशदौ पादौ हिया स्यन्दिनौ ।

एतत् सप्तपदप्रमाणमिह भोः! सम्पाद्यते योजना

यद्येषा क्षणदा भवेद् युगशतं धन्यो मदन्यः कुतः ।।" 12

(11) अविमारकम् अङ्डू 3/19

(12) अविमारकम् अङ्क 3/20

स्त्रियों के अयत्नज अलङ्कार- पुरुषों के सात्त्विक भावों की तरह स्त्रियों के 7 अयत्नज अलङ्कार होते हैं। जब पात्र पूरे मनोयोग से अभिनय करता है तो ये अलङ्कार बिना प्रयत्न के दिखाई पड़ते हैं।

शोभा - रूप यौवन तथा लावण्य आदि से विकसित अङ्गो को सजाना अथवा शारीरिक सौन्दर्य का खिल उठना शोभा कहलाता है। प्रतिमानाटक में सीता के आचरण से 'शोभा' का प्रदर्शन हुआ है।

सीता- हला! किन्नु खलु ममापि तावत् शोभते।

अवदातिका – भट्टिनि! सर्वशोभनीयं सुरूप नाम। अलङ्करोतु भट्टिनि।

सीता - आनय तावत्। (गृहीत्वालङ्कत्य) हला! पश्य किमिदानीम् शोभते। 13

कान्ति - नाट्यशास्त्र में कामोन्मेष से बढ़ी हुई शोभा को कान्ति कहा गया है। अविमारक नाटक में अविमारक से मिलने को आतुर कुरंगी की शोभा कान्तिमान है।

दीप्ति - कान्ति का अतिशय विस्तार दीप्ति कहलाता है अविमारक से पुनर्मिलन के अवसर पर कुरंगी में इस भाव को देखा गया है।

माधुर्य - शारीरिक क्रियाओं में रमणीयता रहना माधुर्य है।

धैर्य - चञ्चलता से रहित तथा सभी बातों में आत्मश्लाघा से विमुख रहने वाली स्वाभाविक मनःस्थिति को नाट्यशास्त्र में धैर्य कहा गया है। वासवदत्ता के चरित्र में यह भाव सर्वाधिक मिलता है। पति उदयन के मङ्गल के लिए वह गुप्त वेष में पद्मावती के संरक्षण में रहना स्वीकार कर लेती हैं और पद्मावती के साथ उदयन का विवाह होने पर विचलित नहीं होती।

(13) प्रतिमानाटकम् - अङ्क१

औदार्य - सभी अवस्था में नम्रतापूर्ण आचरण करना औदार्य है। भास के नाटकों में वासवदत्ता, पद्मावती तथा प्रतिमानाटकम् की सीता में विशेष रूप से औदार्य नामक भाव देखा जाता है।

प्रागल्भ्य- सम्भाषण या अन्य कार्यों को निर्भय होकर करना प्रागल्भ्य कहलाता है।